RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

भारतेंदु युगीन हिन्दी पत्रकारिता में नवजागरण का स्वरूप

डॉ0 संयुक्ता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग वीर कुँवर सिंह विश्वविघालय, आरा

प्रस्तावना

भारतेंदु और उनके युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्य सर्जकों ने जो समाजसेवी पत्रकार, समर्पित राजनीतिक कार्यकर्ता और प्रबुद्ध समाज–सुधारक भी थे, उन्होंने स्वयं अपनी पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित करके सुषुप्त हिन्दी समाज को जगा दिया था और नव–शिक्षित वर्ग को हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र को अपनाने के लिए उत्प्रेरित किया। फलस्वरूप इस काल में लगभग 350 पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। बौद्धिक विश्लेषण करके यह पाया गया कि परिणाम या संख्या की दृष्टि से ही नहीं, गुणवता और श्रेष्ठ प्रतिमानों की दृष्टि से भी इस युग की अधिकांश पत्र–पत्रिकाएं गौरव की अधिकारिणी हैं। इनमें निःस्वार्थ बौद्धिक साधना, उत्कृष्ट राष्ट्रीय चिंतन, मौलिक संजन के प्रमाण इनके प्रखर संपादकीय लेखन, क्रांतिकारी साहित्यिक विधाओं एवं राष्ट्राभियान युक्त पत्रकारिता–सामग्री में मिल जाते है। तात्पर्य यह कि भारतेन्दु युग के पत्र–संस्थान केवल समाचार–वितरण की एजेंसियां न होकर जनता के टूटते मनोबल, स्खलित आस्था को जोड़नेवाले सेतु थे। विवेच्यकालीन पत्रकारिता ही आधुनिकता, राष्ट्रीयता और भारतीयता की वाहिका रही जिसका मूल ध्येय राष्ट्र–साहित्य–भाषा–पत्रकारिता के उच्च आदेशो और स्वाधीनता के लिए जूझना था।

नवजागरण काल की पत्रकारिता का कलेवर विविध सर्जनात्मक एवं ज्ञानात्मक सामाग्री से आपूरित था। हिन्दी के आधुनिक गघ, खड़ी बोली की राष्ट्रीय कविता और जनभाषा को साहित्यिक कलात्मक स्तर प्रदान करने में तत्कालीन पत्र और पत्रकारों के अविस्मरणीय योगदान रहा। भारतेन्दु युग में पत्रों के माध्यम से गघ का एक स्वतंत्र आत्म–निर्भर स्वरूप और आधुनिक विधागत मौलिक कृतित्व उभर कर सामने आया।

सामाजिक नवजागरणः–

भारतेन्दुयुगीन पत्र–पत्रिकाओं ने टूटते मूल्यहीन सामाजिक मनोदशाव सामाजिक अन्तर्विरोधों का सजीव चित्रण किया है। भारत के सामाजिक जीवन के पुरातन आदर्श जो कभी मूल्यवान थे, उन्नीसवीं शताब्दी तक आते–आते जड़ होकर अपनी अर्थवता और मौलिक शक्ति खो चुके थे। पत्रकारिता ने समाज के हर दुखती रग को छेड़ा था। तत्कालीन पत्रकारिता में जीवन्नतता और प्रासंगिकता उनकी गहरी जीवन सम्पृक्ति में ही मानी जा सकती है। उस काल में व्यापक अभियान छेड़कर भारतेन्दु युगीन पत्रकारों ने सामाजिक जन–जागरण का प्रवर्त्तन किया था। अतः सामाजिक चेतना के उद्‌बोधन में जितनी भूमिका तत्कालीन समाज उन्नायकों जैसे– राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र, दयानन्द सरस्वती, रानाडे, ईश्वरचन्द विघासागर आदि की रही वैसे ही समकक्ष युगीन पत्रकारों की भी रही।

भारतेंद युगीन पत्रकारिता ने विवाह के अवसर पर दहेज लेने–देने की भर्त्सना कर समाज और सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। 'हिंदी प्रदीप', 'कविवचन सुधा', भारतबंधु, 'नगरी नीरद' आदि पत्र–पत्रिकाओं ने तत्कालीन समाज में प्रचलित दहेज प्रथा से उत्पन्न दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। 'कविवचन सुधा' ने भी सरकारी सहायता की अपेक्षा रखते हुए कहा था–"ब्राहम्णों के इस वर्ग में लड़की का विवाह तब तक नहीं होता जब तक लड़की का बाप वर के बाप को दान के रूप में अच्छी राशी नहीं देता। निर्धन मां–बाप की लड़किया बुढ़ापे तक कुंवारी बैठी रहती हैं।

अस्पृश्यता जैसी अमानवीय प्रथा ने सामाजिक विभाजन पर बल दिया। बहिष्कृत–तिरस्कृत इस प्रथा के खिलाफ भारतेन्दु युगीन रचनाकारों ने रोष प्रकट किया। अस्पृश्य वर्ग के लिए साधारण अपराध में भी कठोर दण्ड की व्यवस्था थी। उनपर सामाजिक–उत्पीड़न–अन्याय धर्म सम्मत माना जाता था। पत्र–पचिकाओं के माध्यम से अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए शिक्षा–प्रचार पर जोर दिया गया। भारतेन्दु जी ने स्पष्ट कहा था– जाति में कोई चाहे ऊंचा हो चाहे नीचा हो सबका आदर कीजिए– छोटी जाति के लोगों का तिरस्कार करे उनका जी मत तोड़िए।

राजनीतिक नवजागरणः

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से भारतेन्दु युगीन राजनीतिक गतिविधियों की पारदर्शक सच्चाई उजागर होती है। 19 वीं शताब्दी के क्रांतिकारी परिवर्तनों और नवजागरण की तेज लहर ने भारतीय जीवनकी सम्पूर्ण चिन्तन धारा का रूख ही बदल दिया था। राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए जन–सामान्य को औपनिवेशिक अर्थतंत्र एवं शोषण–दोहन का ज्ञान कराना और उसके विरूद्ध वातावरण पैदा करना राष्ट्रीय चेतना के विकास का अनिवार्य था।

भारतेन्दु युग के पत्रकारों में जो राजभक्ति थी धीरे–धीरे कम होती चली गयी। भारतेन्दु में देशभक्ति की पहली झलक 'कविवचन सुधा' के सिद्धान्त वाक्य में मिलती है–"स्वत्व निज भारत गहै।"

नवजागरणकालीन पत्र–पत्रिकाओं ने अग्रेजी राज की चकाचौंध भी उपलब्धियों के झांसे में न आकर भारतीय दुर्दशा का पारदर्शी रूप उजागर कर सभ्य और उन्नत बनाने के मुखौटों को बेनकाब कर दिया था। जिस दरिद्र आंग्ल कंपनी ने अपार धन कमाने के प्रलोभन से 1600 ई0 में समृद्ध भारत की धरती पर पर्दापण किया था, वह अपनी कुटिल व्यूह रचना से भारत को विपन्नता और भूखमरी के कगार पर पहुंचा 1856 ई0 तक अपराजित सबल केन्द्रीय सता बन चुकी थी। अंग्रेजों ने जो भारतीयों के लोक–हित चिन्तन का ढोंग रचा उसे पर्दाफाश कर उनकी वास्तविक लुटेरी प्रवृति से अवगत कराया। अंग्रेजी सत्ता के विषय में उन्होंने लिखा था– "भीतर–भीतर सब रस चूसै, हंसी हंसी तन मन धन चूसौ,

जहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन, नहीं अंगरेज।

अंग्रेजो ने भारतीयो को हर क्षेत्र में तुच्छ समझा था। उनको बराबरी के स्तर पर पद, वेतन और सम्मान न देकर रंग–भेद–नीति को पश्रय देते थे। भारतेन्दु–युगीन पत्र–पत्रिकाओं ने इसकी कटु भर्त्सना की थी। सभी उच्चस्थ पदो ंके पदाधिकारी अंग्रेज ही रहे।

आर्थिक नव जागरणः

भारतेन्दु युगीन जागरण के दौर आर्थिक कारकों की भूमिका केन्द्र में थी। लोगों को विश्वास हो गया था कि देश से कच्चे माल का निर्यात और उपयोग्य वस्तुओं का आयात केवल राष्ट्रीय क्षति ही नहीं राष्ट्र के लिए अपमान का भी विषय है। देश के आर्थिक लूट पर एक समृद्ध ब्रिटेन का निर्माण हो रहा था। जिसे युगीन हिन्दी पत्रकार अच्छी तरह से समझे रहे थे।

भारत एक कृषि प्रधान देश है 'ब्रहम वाक्य के साथ सत्रहवीं एवं अठारहवी' सदी में भी भारत में निर्मित वस्तुएं, विशेषकर सूत्री और रेशमी वस्त्र, विश्व बजार में अच्छे मूल्य पर बिकती है। शिल्प और दस्तकारी ही वे तत्व थे जिनके प्रति ईस्ट इंडिया कंपनी आकृष्ट हुई थी। यहां की दस्तकारी को विश्व बाजार में बेचकर मुनाफा कमाने के उदेश्य से अंग्रेज यहां आए थे फिर जमकर भारत का आर्थिक शोषण किया। भारत के शोषण का प्रभाव ब्रिटेन के जनजीवन में लक्षित किया गया। ब्रिटेन में उत्पादित सस्ता माल बिक्री के लिए भारत में भेजकर ब्रिटेन में भारतीय माल के प्रवेश कर लगाकर भारत को अधिक–से–अधिक लूटने का कार्य प्रारंभ हुआ।

सांस्कृतिक नवजागरणः

पत्र–पत्रिकाओं ने डाली, वह एक ओर अंग्रेजी राज्य का विरोध करती थी। तो दूसरी ओर वह भारतीय रूढ़िवाद को भी चुनौती देती थी। उन्होंने जिन अन्ध विश्वासो और कुरीतियों की ऐसी तीव्र आलोचना की थी, उसका ऐतिहासिक महत्व है। अंग्रेजी राज्य इस सामन्ती संस्कृति का था। समाज के पंडे–पुजारी अंग्रेजी राज्य और सामन्तो के सबसे बड़े सहायक थे। इनकी अज्ञानता व विषमता का नाशा इस युग में हुआ।

भारतेन्दु युगीन पत्रकारों ने जिस संस्कृति का निर्माण किया, वह जनवादी थी। उन्होंने धर्म, संस्कृति, साहित्य,शिष्टाचार पर पुरोहित मौलवियों का इजारा तोड़न के उपाय बताये। विधवा–विवाह का समर्थक किया, बाल–विवाह का विरोध किया। कुलीनता, जाति–प्रथा, छुआछूत आदि का जोरदार खंडन किया, लोगों के धार्मिक अन्धविश्वासों की कड़ी आलोचना की और स्त्री–शिक्षा पर खासतौर से जोर दिया। इस जनवादी संस्कृति के तत्व भारतेन्दु युगीन पत्रकारों अपने देश से मिले थे, वे उनके अपने चिन्तन का फल थे।

अंग्रेजी सरकार पक्षपात की सरकार थी। वह अपने यहां वालों को भला करने आई थी न कि हमारे देश का। यघपि भारतेन्दु ने संग रूप से अंग्रेजी राज्य के खिलाफ इस धारणा का प्रचार नहीं किया, फिर भी यह धारणा उस राष्ट्रीय संस्कृति का आधार बन गई जिसका विकास भारतेन्दु और उनके सहयोगीयों ने किया। भारतेन्दु ने अंग्रेजी राज्य की तारीफ करते हुए उसके आतंक की तरफ इशारा भी किया था–

"कठिन सिपाही द्रोह अनल जा जलबल नासी।
जिन भय सिर न हिलाइ सकत कहुं भारतवासी।।"

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

कैसा सुन्दर जनतंत्र था। लोगो डर के मारे सिर भी न हिला सकते थे। भारतेन्दु युग में असंगतियों का आधार समूचा युग नहीं है, समूची जनता नहीं है, बल्कि एक वर्ग विशेष है, थोड़े से राजभक्त विद्वानों की तरफ देखा, लेकिन उन्हे हर तरफ निराशा ही हुई। 'भारत दुर्दशा' में यही नतीजा निकाला गया कि अंग्रेजों से आशा करना व्यथ है।

स्वदेशी के साथ भारतेन्दु युगीन पत्रकारों ने धार्मिक सहिष्णुता और हिन्दु–मुस्लिम एकता का सूत्र भी अपनाया। इस तरह उन्होने उत्तर भारत में राष्ट्रीय संस्कृति की नींव डाली और उस नींव पर हमारी संस्कृति का निर्माण हो रहा है। इसके विरूद्ध धार्मिक द्वेष, साम्प्रदायिकता और फूट की भावनाएं इस इमारत पर चोट करती जिसकी नींव पत्र–पत्रिकाओं ने डाली थी।

धार्मिक नवजागरणः

भारतेन्दु युग में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने धर्म को व्यापक उदान्त अर्थ में ग्रहण किया था। उसे युगीन पत्रकारों ने किसी संप्रदाय–विशेष से संबद्ध न कर मानव धर्म और राष्ट्र–धर्म के रूप में निरूपित किया है। धर्म की धारणा रूढ़िवादी रूप में न पनपकर एक समग्र राष्ट्रवादी धर्म के रूप में उभर रही थी।

धर्म की व्याख्या करते हुए 'हिंदी प्रदीप' में लिखा है– "धर्म ऐसा होना चाहिए जिस पर चलकर समाज में बल आवे– धर्म धृ धातु से बना है जिसका अर्थ धारण या रक्षा के हैं। धर्म पर चलने से हमारी रक्षा नहीं हुई तो उसे धर्म नहीं मानेंगे जिस बात से देश की उन्नति हो वही धर्म हैं।

भारतेन्दु युग में धर्म का मुख्य ध्येय राष्ट्रीय उन्नयन, परस्पर सद्भाव और एकता की भावना जागृत करना था। "बहुत से लोग मानते हैं कि धर्म केवल परलोकके साधन के लिए है, हमारे इस जीवन से कोई सरोकार नहीं है–ऐसा मानने वालों की यह बड़ी भूल है जो अपने इस जीवन को बिगाड़कर परलोक बनाने की फिकिर में हैं।"

भारतेन्दु युगीन पत्र–पत्रिकाओं ने ब्राहम्णों, मठाधीशों, साधु–संन्यासियों और ढोंगियों के कपटाचरण की जमकर पोल खोली है। इनमें धार्मिक चरित्रहीन व्यक्तियों के नैतिक ह्रास की ओर इंगित किया गया है।

'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' में भारतेन्दु ने कहा कि धर्म के लोप होने के लिए वास्तविक रूप से उतरदायी कर्मानुष्ठान और आंबडरों ही है। अनेक कोटी देवी–देवताओं का महात्म्य, छोटी–छोटी बातों में बह्म हत्या का पाप और तुच्छ–तुच्छ बातों में बड़े–बड़े यज्ञों का पुण्य अहं बह्म ज्ञान और मूल धर्म छोड़कर उपधमो के आग्रह ने भारतवर्ष से वास्तविक धमो का लोप कर दिया। धर्म हमारा ऐसा निर्बल और पतला हो गया है कि केवल स्पर्श सेवा एक चुल्लू पानी से भर जाता है। कच्चे गले–सड़े सूत वा चिउंटी की दशा हमारे धर्म की हो गई है।

साहित्यिक नवजागरणः

19 वीं शताब्दी के नवजागरण काल की हिन्दी पत्रकारिता का कलेवर भी सर्जनात्मक एवं ज्ञानात्मक सामग्री से आपूरित था। भारतेंदु युग के पत्र–पत्रिकाओं के संपादक पत्रकार हाने के साथ प्रतिमा–सम्पन्न सर्जनाकार भी थे। साहित्य के विविध क्षेत्रों में इन पत्रकारो ने अविस्मरणीय योगदान दिया है। भारतेन्दु काल की पत्रकारिता देश के साहित्य, भाषा, ज्ञान, कला आदि के राष्ट्रीय संवेदना की सफल अभिव्यक्ति की है। युगीन साहित्यिक परिवेश और राष्ट्रीय दशाओं की अभिव्यंजना ऐतिहासिक परिपार्श्व को ध्यान में रखकर ही की गयी है। साहित्य सर्जनात्मक क सघनतम कलात्मक प्रस्तुति है, पत्रकारिता सामान्यतः यथार्थ भावबोध को हल्के सर्जनात्मक, सहज, स्पर्श के साथ संप्रेषित करने की कला है। भारतेंदु काल के संपादक–लेखकों ने साहित्य और पत्रकारिता को मौलिक संवेदनशील और मानवीय बनाकर उनके अंतर को बहुत कुछ मिटाकर उनमें संबंध स्थापित कर दिया था।

तत्कालीन भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सामयिक कथानक लेकर अनेक मौलिक अनुदूति नाटकों एवं व्यग्यात्मक प्रहसनों द्वारा भदे पारसी नाटकों से जनता का ध्यान हटाया और उनकी रूचि परिमार्जि करने की चेष्टा की। इस सस्ते व्यावसायिक रंगमंचीय मनोरंजन की चुनौती का सामना करने के लिए इन नाटककारों ने एक ओर अशिक्षित जनता के लिए मेलों–ठेलों में शिक्षाप्रद मनोरंजक नाटकों का मंचन किया, दुसरी ओर शिक्षीत वर्ग के लिए इन्हें पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया तथा स्वयं रंगमंच–संस्थाएं स्थापित करके 'नील देवी', 'अन्धेरी नगरी', 'भारत दुर्दशा' आदि नाटकों में स्वयं अभिनय किया।

भारतेन्दु युग के पत्रकारिता साहित्य में पहली बार व्यंग्य, उमंग, उल्लास से भरपूर विनोदपूर्ण गूंज सुनायी पड़ती है। उस काल की राजनीतिक प्रतिक्रियाओं, सामाजिक पुनरूत्थान और धार्मिक वाद–विवादों में इन सम्पादकों ने सक्रिय भाग लिया था। अतः जीवन की ज्वलंत समस्याओं का समाधान हास्य–व्यंग्यात्मक शैली में निबंध विधा में किया।

निष्कर्षः

भारतेंदु युगीन पत्रकारों ने सुषुप्त समाज को नवजागृति प्रदान की। युगीन पत्रकारिता राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित और जनाधरित थी। इस युग के संवेदनशील रचनाकारों ने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से टूटते सामाजिक मूल्यों व धार्मिक अंध विश्वासों

से जनता को मुक्त कर प्रासंगिक चेतना को जागृत किया। समाजिक नवजागाण से प्रेरित इस युग की पत्रकारिता ने कुसंस्कारों व अंधविश्वासों के विरोध में आंदोलन चलाया। जाति–व्यवस्था, अनमेल विवाह, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा जैसी सामाजिक विसंगतियों को दूर करने हेतु नवजागरण व समाज संधार आंदोलन के प्रबुद्ध जन नेताओं ने आंदोलन चलाया। जाति भेद, वर्णभेद, संप्रदाय भेद ने समाज को दुर्बल बनाने की भरपूर कोशिश की जिसे पत्र–पत्रिकाओं व सामाजिक सुधार संस्थाओं ने प्रगति के मार्ग में बाधा बता कर दूर करने की कोशिश की 'हिंदी प्रदीप', 'कविवचन सुधा', 'भारत बंधु', 'नगरी नीरद' आदि पत्र–पत्रिकाओं ने तत्कालीन सामाजिक कुप्रथाओं की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। नारी को मानसिक व शारीरिक उत्पीड़ीन से मुक्त करने के लिए मानवतावादी मूल्यों को जागृत किया गया। टूटने मूल्यों के प्रति तीव्र संवेदना व्यक्त कर पत्र–पत्रिकाओं ने आत्म संबल प्रदान किया। अनेक सुधारवादी संगठनों ने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर जोर दिया। भारतेंदु युगीन पत्र–पत्रिकाएं धीरे–धीरे लोक चेतना से जुड़ गयी और इन सामाजिक विसंगतियों के विरूद्ध वातावरण तैयार किया।

वस्तुतः भारतेंदु युगीन हिंदी पत्रकारिता में नवजागरण का ध्येय राष्ट्रीय चेतना, भाषायी एकता, सामाजिक–सांस्कृतिक उत्थान, आर्थिक प्रगति अर्थात् देशोत्थान से रहा है। और अपने इस लक्ष्य को पाने में भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता पूरी तरह सफल रही है भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता ने मध्यकालीन सामन्ती सामाजिक संरचना के रूढ़ बन्धनों एवं धार्मिक कुरीतियों व अन्धविश्वासों के कुहासे को फाड़कर भारतीय समाज में नवजागृति व नवचेतना फैलाने का कार्य किया जिससे आधुनिक भारत का जन्म संभव हो सका।

संदर्भ सूचीः

1. डॉ. वंशीधर लाल : स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता
2. गिरधर गैरोलाः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, 1988 पृ0 60
3. मार्गरीटा बार्न्सः द इण्डियन प्रेस
4. कविवचन सुधा, 16 फरवरी 1874
5. कविवचन सुधा, 16 फरवरी 1874
6. हिंदी प्रदीप, अक्टूबर, 1889
7. हिंदी प्रदीप, जनवरी, फरवरी, मार्च 1887 ई0
8. प्रताप नारायण मिश्र, सं. नरेशचंद्र चतुर्वेदी– कवितावली, पृ0 139

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)